पघलैत हिमखंड

पिघलते हिमखंड

रजनी छाबड़ा

मैथिली अनुवाद

पघलैत हिमखंड

डॉ. शिव कुमार प्रसाद

Published by: Pallavi Parkashan
Tulsi Bhawan, Nehru Marg, Ward No. 06, Nirmali, District- Supaul, Bihar: 847452
website: http://pallavipublication.blogspot.com
e-mail: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
Mobile: 8539043668, 9931654742

Price: 150/-
Copyright © Original- Author
Copyright © Translation- Translator
First published 2018

Typeset and Printed By: Manav Arts, Nirmali (Supaul). Pin: 847452

PAGHALAIT HIMKHAND

Maithili translation of 'Paighalte Himkhand'
An Anthology of Hindi Poems by Rajni Chhabra from Hindi into Maithili by Dr. Sheo Kumar Prasad.

All rights reserved. No Part of this publication may be reproductd or transmitted, in any form or by any means, without prior permission of the author.

ISBN: 978-93-87675-69-8

सिनेहार्पण

अपन तेसर पीढ़ी

नाइत-नातिन

अमृत

शुभम्

आ

सृष्टिवरदा

कैँ

अनुसृजन : साहित्यिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान

साहित्य सृजन मन के भावों को उकेरने का माध्यम है और अनुवाद इन भावात्मक छवियों को अपनी भाषा के शब्द शिल्प में बाँध कर और विस्तार देने का सशक्त साधन।

लेखन में भावाभिव्यक्ति जब दिल की गहराईयों से उतरती है, भाषा और प्रदेश के बन्धन तोड़ती हुई, सुधि पाठकगण के मन में गहनता से स्थान बना लेती है। यहाँ मैं यह बात अपने हिन्दी काव्य संग्रह 'पिघलते हिमखंड' के सन्दर्भ में भी कह रही हूँ। इस काव्य कृति की चुनिन्दा कविताओं के नेपाली, बंगाली, पंजाबी, राजस्थानी, मराठी, गुजराती में अनुवाद की श्रृंखला में एक विशिष्ट कड़ी जुड़ गयी है; सम्पूर्ण काव्य संग्रह का मैथिली अनुवाद और यह सराहनीय अनुसृजन डॉ. शिव कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी, भू. ना. मण्डल विश्व विद्यालय, मधेपुरा (बिहार) के अथक प्रयासों का परिणाम है।

व्यक्तिगत रूप से डॉ शिव कुमार से कोई परिचय नहीं था। फेसबुक की आभासी दुनिया के माध्यम से जान पहचान हुई। मैंने आज तक अपने प्रथम हिन्दी काव्य संग्रह 'होने से न होने तक' के अलावा अपनी अन्य मौलिक और अनुसृजित काव्य कृतियों का कभी भी औपचारिक लोकार्पण नहीं करवाया। सोशल मीडिया पर ही पाठक गण को अपनी कृतियाँ लोकार्पित किया करती हूँ। बहुत से साहित्यिक प्रवृति के मित्रों व् प्रकाशकों से परिचय हुआ फेसबुक के माध्यम से। डॉ. शिव ने भी मेरी कुछ रचनाएँ फेसबुक पर देखी, जिन में से 'पिघलते हिमखंड' की रचनाएँ उन्हें काफी पसन्द आयी और उन्होंने इस काव्य संग्रह की मैथिली में अनुवाद करने की इच्छा जतायी, जिसे मैंने सहर्ष स्वीकारा। यह उनकी निष्ठा और कार्य के प्रति समर्पण का ही फल है की इतने अल्प समय में इतना प्रभावी

अनुसृजन हो पाया है। मूल रचनाकार के मनोभावों को आत्मसात करना और उस में अपनी भाषा में अभिव्यक्त करते हुए शोभा में वृद्धि करना कोई आसान काम नहीं है; परन्तु डॉ शिवकुमार से इस अनुवाद कार्य को बहुत सहजता से सम्पन्न किया।

यदि आप इन कविताओं को मैथिली में पढेंगे तो ऐसा आभास होगा जैसे कि यह मूलतः मैथिली में ही लिखी गयी हों। यह अनुसृजनकर्ता की अत्यन्त प्रशंसनीय उपलब्धि है। कुछ चुनिन्दा रचनाओं का आनन्द आप भी लीजिये, मूल हिन्दी और अनुदित मैथिली रचना-

मधुबन

कतरा
कतरा
नेह के
अमृत से
बनता पूर्ण
जीवन कलश

यादों की
बयार से
नेह की
फुहार से
बनता जीवन।

मधुबन

मधुबन
बुन्न बुन्न
नेहक अमिय सँ
जिनगीक घैल
भरैत छै।
स्मृतिक
बसात आ
नेहक फुहार सँ
बनैत छै
जिनगीक मधुबन।

यह कैसा सिलसिला

कभी कभी दो कतरे नेह के
दे जाते हैं सागर सा एहसास

कभी कभी सागर भी
प्यास बुझा नहीं पाता

जाने प्यास का यह कैसा है
सिलसिला और नाता।

ई केहन सत्तैर

कखनहूँ तऽ नेहक दू बुन्न
दऽ जाएत छै सिन्धु सन तोष।

कखनहूँ समुद्रो
पियास नहि मेटा पबैत छै।

नै जानि पियासक ई केहन
सत्तैर आ नाता छै!

क्या जानें
बिखरे हैं आसमान में
ऊन सरीखे
बादलों के गोले
क्या जाने, आज ख़ुदा
किस उधेड़ बुन में हैं।

की जानि

छितराएल छै अकाश मे
ऊँन सन
मेघक गोला
की जानि आइ परमतमो
कोन गुण धुन मे लागल छैथ!

मैथिली अनुवाद सुधि पाठकों को सौंपते हुए, प्रभु से कामना करती हूँ कि डॉ. शिव कुमार की अनुदित कृति साहित्य जगत में विशिष्ट पहचान बना पायें। हृदय से आभारी हूँ अनुसृजनकर्ता की जिनके माध्यम से मेरे हिन्दी काव्य संग्रह 'पिघलते हिमखंड' को साहित्यिक रूप से समृद्धभाषा मैथिली में विस्तार मिल रहा हैं। इस काव्य गुच्छ की सुरभि कहाँ कहाँ पहुँची, जानने की उत्सुकता और आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

रजनी छाबड़ा
बहुभाषीय कवयित्री व् अनुवादिका
गुरुग्राम (हरयाणा)

आमुख आ आभार

रहलहुँ सभ दिन भावक भूखल
भावक नेसलहुँ दीप
भाव बिना जिनगी छै सुन्ना
भावे जरए नव दीप।

एहि पोथिक मूल रचना करएवाली फेसबुक मित्र कवयित्री, बहुभाषाविद् विदुषी रजनी छाबड़ा केर सतत प्रोत्साहन आ सहयोगसँ ई पोथी पूर्ण भेल अछि। हुनक प्रतिभा आ लगनकेँ पाँखि लागल रहैन।

अपन महाविद्यालयक सभ समांगकेँ एहि अवसरपर हृदयसँ आभार ज्ञापित करैत छी, जे एहि काजमे विविध रूपेँ सहयोग केलाह अछि।

संगे, दु:ष्कर काज पल्लवी प्रकाशनक कार्यकर्ता गणक रहलैन। उमेशजी, हुनक पत्नी- पुनम (हमर पुतोहु), पल्लो, तुलसी आ सुटकलहा पोता- मनु केर आवभगत एहि पोथिक प्रकाशन हेतु हमर सम्वल बनल। तँए, एहि परिवारकेँ हमर बहुत-बहुत सिनेह आ आशीष...।

एहि अवसरपर फेसबुक मित्र जिनक टिप्पणी तथा सुझाव भेटैत

रहल हुनका प्रति हृदयसँ आभारी छी। एहि अवसरपर अपन अग्रजक संग-संग जेठ भाय श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आशीषक अभिलाषी छी।

ई भाव पुष्प सुधि पाठक समक्ष समर्पित अछि। आग्रह जे सुझाव, समीक्षा आ त्रुटि दिस अवश्य धियान दियाबी...।

शिव कुमार प्रसाद

31 मार्च 2018

निर्मली।

काव्य-क्रम

1. मधुबन 19
2. बन्दगी 20
3. उन्मुक्त 21
4. ई सेहन्ता 22
5. खाली अप्पन 23
6. बन्हकी 24
7. की जानि 26
8. परिचय 27
9. हमर दियारी 28
10. मनक बन्न केबाड़ 29
11. घा 31
12. बहुत अछि 32
13. बौआइत मन 33
14. अहाँ बिनु 34
15. केकरा चिन्ता रहै छै 35
16. सन्तोषमे ओ सुआद केतऽ! 36
17. अकास भरल छै 37
18. बेसुध 38
19. नारी 39
20. एकटा हेराएल जनानी 41
21. राजभाषा 45

22. बिद्याक बाट 47
23. आजुक नारी 49
24. हम केतए छेलौं 50
25. बिसबास 53
26. मनक कनकौआ 55
27. घर 57
28. सुनसान 58
29. कुहेस 59
30. साँचक धरातल 60
31. एहि प्रकारें 62
32. नेनपनक घुमब 63
33. मेलामे एसगर 64
34. हमहुँ जीबि रहल छी 65
35. लहैर 67
36. मनक बजार 68
37. जिनगीसँ की चाहै छी 69
38. केहेन भटकब 71
39. बेमन जिनगी 72
40. हिमखंड 73
41. ई केहन सत्तैर 74
42. बन्न ठोर 75
43. केना बिसैर सकै छी? 76
44. घरक पाग 77

45. खेलौना सन 80
46. घर आओर मकान 81
47. एहेन कोन जीयब 82
48. बहए दियौ जिनगीकेँ 83
49. ई केहेन नाता 84
50. मनक परखेरू 86
51. कचोट 88
52. स्मृति 89
53. आसक चिड़ै 90
54. साँसक संग 91
55. चर्चा 93
56. दिगंतक नजीक 94
57. केहेन उपराग 95
58. सुख-दुख 96
59. आन 98
60. कारण 99
61. सतरंगा आनन्द 100
62. अहाँक थाती 102
63. बिसबासक मूर्ति 104

मधुबन

बुन्न बुन्न
नेहक अमियसँ
जिनगीक घैल
भरै छै।

स्मृतिक
बसात आ
नेहक फुहारसँ
बनै छै
जिनगीक मधुबन। ❑

बन्दगी

भावना करवनो
मरैत नहि छै
भाव जीवित अछि
तँ जिनगी अछि।

समयक आँचरमे सहेजल
छिन-छिन केर भाव
ईश्वरक अरधना छै। ❑

उन्मुक्त

झरनाक कलकल
चिड़य केर चहकब
उन्मुक्त उड़ब
चानन सुवासित बसात
सौनक झींसी
यएह तँ अछि
अहाँक हँसबाक
चिन्हास।

मोती जड़ित घर केर
दुआर तँ खोलू
ओढ़ल मुस्कीकेँ
आबो तँ छोड़ू। ❑

ई सेहन्ता

ई सेहन्ता अहाँकेँ हमर
घर ओ हँसैत सपना अछि
नीन हमर खुलए ने कहियो
जँ ई बात साँच अछि
नीन कखनो ने आबए। ❑

खाली अप्पन

खुशीपर सदैत
जुगक पहरा रहै छै
दुखेटा मात्र अपन होइ छै
जौं बहुत गहींर हो। ❑

बन्हकी

हाथ जोड़ने
माथ
झुकौने
सिकुड़ल समटल सन
ठाढ़ छल ओ
खिड़कीसँ
झरैत
किरिण लग
अपन कलाकीर्तिक आगू
चित्रपट देखबैत छेलइ
क्षितिज छुवाक आसमे
पेंग भरैत
उन्मुक्त पाखी
आर सोझामे बिनु पाँखिक
चिड़ए सन
आहैत
भाव नेने
ओ चित्रकार

बन्हक राखि चुकल छल
अपन अनुभूतिकेँ
कल्पना
सम्वेदना
अपन कलाकेँ
संरक्षक लग। ❑

की जानि

छितराएल छै अकासमे
ऊँन सन
मेघक गोला
की जानि आइ परमतमो
कोन गुण धुनमे लागल छथि! ❑

परिचय

अन्हारकेँ
अपन छातीमे समेटने
जेना दीप बनबै छै
अपन दीपित परिचय।

ओहिना अन्तरमे
अपन नोर नुकेने
संसारकेँ देमए पड़त
मात्र अपन हँसी ।

अपन बेनाओं जिनगीकेँ
देमए पड़त अहिना
नव परिचय। ❑

हमर दियारी

सेहन्ताक बातीसँ
जरेलहुँ
एकटा दियारी
अहाँक नाओं।

लाखक लाख दियारी
अहाँक सिनेहक
अपनहि
झिलमिला गेलइ। ❑

मनक बन्न केबाड़

एहिसँ पहिने की
अपन अधखरुआ कचोट
अहाँकेँ चकनाचूर कऽ दिए
सगर जिनगी हँसबासँ
कऽ दिए नचार
फोलि दियौ
मनकेर केवाड़
आ निकालि दियौ
अपन मनक विषाद।

दरद तँ सभकेँ हृदयमे रहिते छै
दरदकेँ पुरबे पुरुषासँ
सभकेँ सम्बन्ध छै
किछु अपनो कहू किछु हमरो सुनू
दरदकेँ मिल जुलि सहू।

एहिसँ पहिने कि ओ
बहैत बहैत बनि जाए भोकन्नर

सिनेहक मलहमसँ
करू ओकरा फराक
सिनेहक अमृत पटा
सुख दुख लिअ बाँटि
मनक संग जीवन
सिनेहसँ करू पूर
फोलि दियौ मनक बन्न केबार
आ बिषाद करू दूर। ❑

घा

मन आ आँखिक
बीच
बड़ गहींर
नाता छै
मनक घा
आँखिक
नोरे बनि ने
बहै छै। ❑

बहुत अछि

एक गोट सपना
निस्तेज आँखिक लेल।

एकटा सिसकी
निःशब्द ठोरक लेल।

एकटा चिप्पी
फाटल छातीकेँ
सिबाक लेल।

बहुत छै
एतेक समान
हमरा जीबा लेल। ❑

बौआइत मन

बौआइत मनकेँ
जखन जिनगीक कोनो
अनभुआर रस्तापर
अपन मनक संगी
मिल जाइ छै,

तँ ओकर चाह रहै छै
कहियो नहि रूकै
ओ रस्ता
एक एक क्षण बनि जाए
जुग सन
यात्रा अहिना चलैत रहए चलैत रहए
जुग जुगान्तर धरि। ❑

अहाँ बिनु

अहाँ बिनु
हिरदे एना
बेकल रहैत अछि
जे दिन उगिते
साँझ बितबाक
बाट ताकए लगै छी। ❑

केकरा चिन्ता रहै छै

केकरा चिन्ता रहै छै बिहाड़िक
बड़का अन्हरक पछाइत।

सभटा दुख छोट भऽ जाइ छै
कोनो बड़का बिपैत एलाक पछाइत। ❑

सन्तोषमे ओ सुआद केतऽ!

सन्तोषमे ओ केतऽ पाबी
जे बेकलतामे सुआद छै
सनकल बेकलतेसँ
भेटए सदैत सफलता छै।

सन्तोष जँ ठेकान तँ
रस्ता बेकलता छै। ❑

अकास भरल छै

अकास भरल छै
दहों-दिस बेकल छै
नहि जानि आइ प्राकृत
कोन लीला करतै! ❑

बेसुध

बेसुधिक हालैतमे
अपनाकेँ हम
ओहिना बजबै छी
जेना अहीं बजाबैत होय हमरा।

नहि जानि कहिया
जएत ई पगलपन
होश हएत
कहिया। ❑

नारी

जनानीकेँ मात्र जनानी
किए नहि बुझल जाइ छै!

समाज स्थापित
कऽ देलकै
ओकरा लेल
जिनगीक किछु आदर्श
किछु शर्त
ओकरा जे निभौती
ओ देबी कहौती।

अपेक्षाक सिंघासनसँ
उतरिते
भऽ जेती पतिता।

करवनो तँ देबी सन पूजलक
करवनो पाएरक पनही बनौलक
करवनो कठपुतरी सन

मन माफिक नचौलक
अपेक्षा एतेक ऊँच भऽ गेलइ
जे जनानीक जिनगी ओछ भऽ गेलइ।

किए नहि मानै छी सभ
ओ मात्र जनानी छी!
सहज सरस सरलमैत
सम्वेदनाक जननी आ
सृष्टिक सिरजनहारि।

अपना मने जिबाक
ओकरो अधिकार छै
जनानी बस जनानी अछि। ❑

एकटा हेराएल जनानी

शिकाइत की अनकासँ
अपने सभ छीनि लेलक
हमरासँ हमर पहिचान।

बेटी पुतौह कनियाँ माए
मे ओझराएल
मेटा लेल
हम अपनेसँ
अपन पहिचान।

बाटपर जाइत काल्हि
सोर पाड़लक संगी
नेन्हपनमे राखल छल
जे हमर नाओं।

खुजए लागल तखन हमर
स्मृतिक झरोखा
रौदक चालैनमे

किरिणसँ निकसल
धुँआएल-धुँआएल नाओं।

हमहुँ कहियो हम छेलौं
माए-बापक फुदकी चिड़ै
हास विलाससँ भरल
उड़ैत रही अँगना-घर
गामक गलीसँ गामक सिमान धरि।

हमर अजादीक खिस्सा पसैर गेल
काँचक किरिच सन गरए लगलैन
अड़ोस पड़ोस संग
सर-सम्बन्धीकेँ
हमर पसरल पाँखिक अजादी।

नोचैले पाँखि अजादिक हमर
सुन्नर सुन्नर बहन्नासँ
करौल गेल बिआह
नेनपनेमे हमर।

पढ़ब-लिखब सपना भेल
हमरा पोल्हाएल गेल

घरेक सेवामे मेवा भेटै छै,
जाबत सुतल छल
अपन पहिचानक इच्छा
ताबत किछु बर्ख धरि
रहलौं गिरहस्थीमे लीन।

बच्चा अपन जिनगी आ
पुरुष अपन काज संग
पलखैत ने हुनका
हमरा लेल एको छण।

पाकैत बाउल सन
तपैए मन।

धधकैत मरूभूमिमे
ढन-ढनाइत घैल सन
मन हमर खाली अछि
जिनगिक मरीचिकामे तकै छी
अपन पहिचान।

फल्लाँक बेटी हम फल्लाँक बहुरिया
फल्लाँक कनियाँ आ फल्लाँक माए बनि

हम गेलौं हेराए।

शिकाइत की अनकासँ
अपने सभ छीनि लेलक
हमरासँ हमर पहिचान। ❑

राजभाषा

भुगतानक बेर बैंकमे
कहल गेलइ नाओं

राजभाषा नाओं देखि
भेटल मनकेँ अराम।

अहाँसँ तँ देशोकेँ
बढ़ल अछि शान
अहाँ बिनु रहने की
होएत हिन्दुस्तानक पहिचान।

भुगतान लेबए काल जखन
लगौलनि ओ औंठा निशान
झमान भऽ खसल मन
भेलौं मृयमान।

नाओं आ गुणक
केतौ ने कोनो मेल

बिधाता की केला
केहन केला खेल।

मनमे लेने ओकर
पढ़ेबाक अभिलाषा
माए-बाप रखने हेतए
नाओं राष्ट्रभाषा।

परिस्थितियो राजभाषासँ केलकै मजाक
अक्षरोक बोधसँ ओकरा केलकै फराक। ❑

बिद्याक बाट

गबरा, धापू, लिछमी आ रामी
पैघ पैघ डेग बढ़बैत
पाठशालाक बाटपर बढ़ि रहल अछि।

आइ बहिनजी सिखेती हाँसिल-जोड़
जेकरा सिखला बुझला पछाइत
बनियाँक चलाकी
नहि चलतै।

आखर ज्ञानसँ
फैदे-फैदा
बनियाँक जोर
नहि चलतैन जादा।

गबरा, धापू, लिछमी आ रामी
आब तोरा सभसँ मनक बात कहियौ
कहबौ किए ने
गामक सभ जनानी पढ़ए चाहै छै

हमहीं किए अनपढ़ रहब?

चुलही पजारैत, दालि भात रान्हैत
बिजलोका जकाँ मनमे लौकैत अछि
धधकैत आगिकेँ निहारैत
सुनगैत मन नेने
चुल्हिसँ कचका कोयला निकालि
देबालेपर ‘क’ ‘ख’ ‘ग’ ‘घ’ लिखने जाइ छी।

सेन्टरपर नहि जा पबैछ तँ की
अपन बेटिये सभकेँ गुरू बनबैत
धापली बिद्याक बाटपर बढ़ि रहल अछि।

छौरमे सुनगैत चिनगी
आहूत करैत शिक्षाक महायज्ञक
हमरा गामक सभ जनाना
महान यज्ञमे आहूति दैत
बिद्याक ठेकान पाबि
सुखद जीबनक बाटपर बढ़ि रहल अछि। ❑

आजुक नारी

आजुक जनानी
अबला नहि
जे बिपैत पड़लापर
टुटलाहा माला जकाँ
छिड़िया जाइ छै।

आजुक जनानी सबला अछि
जकरा टुटियो कऽ
जुड़ब आ जोड़बाक
कला बूझल छै। ❑

हम केतए छेलौं

हम जखन ओहिठाम रही
तखनो
ओतए नहि रही।

अपनहि संसारक मेलामे
हम हेरागेल रही
नहि जानि केतए रही।

पैघक गुणक
नकल करैत छल
हमर व्यक्तित्वक अपहरण,
हमर निजत्व
पपड़ी दर पपड़ी
कब्बरमे झँपाएत रहए
आ हम अपन छीण होइत
स्वसँ फिरसान रही।

काँच उमेड़मे

कनहाक
बेगरता रहै छै।

अपन पैरपर
ठाढ़ भेला पछाइत
कनहा धऽ चलब
अपन बेकूफी छैक।

सोनजूही सन
पुनकब
अपन क्षमता रहितहुँ
दोसराक बले चलब
किए मानि लेने छल
भाग्य हमर।

निःशब्द बेथा
आ नोरसँ
धैरज रखनिहार जगतीक
छाती पटा कऽ
बरखो-बर्खक पछाइत
हम अँकुरलौं अछि आब
मनमे संजोगने

पुनकबाक इच्छा ।

झौंखरा जकाँ नहि,
हम चाहै छी
नीर-निधि सन पसार।

नहि जीबए चाहै छी
गुड्डीक जिनगी,
लेने अकासक पसार,
जुड़ि कऽ साँचक धरासँ
बनए चाहै छी
अपन जिनगीक अपनहि अधार। ❑

बिसबास

अहाँ अपनापर बिसबास राखू
संसार अहाँपर बिसबास करत
पकड़ने रहू आसाक डोरि
अहाँक आस निरास नहि करत।

रौदसँ सुनगैत होए जे आँगन
कहियो ने कहियो इसरक किरपाक मेघ,
छाँह बनि एबे करतै।

कारी सियाह रातिकेँ
छाती चिरबाक तागैत
जइ दियारीमे छै
ओइ दियारीकेँ अन्हरो
निरास नहिएँ करतै।

अन्हरकेँ मुकैबला
जे कऽ लइ छै मलाह
हुनका जिबाक ढंग

अपने आबि जाइ छै।

आस, बिसबास आ
हिम्मतक जखन
होइए छै मिलान
तँ दुनियाँक कोनो कलेस
नहि रहै छै कलेस।

बिसरा जाइ छै पैछला
झंझैटक समय।

बैस जाइ छै फेनसँ
खुशीक घर।

जिनगी गाबए लगै छै
राग आ मलार। ❑

मनक कनकौआ

कनकौआ सन सौखीन मन
लेने चुलबुलीक पहाड़
छूबए चाहैत अछि
सौंसे अकासक बिस्तार।

पहाड़, समुद्र, अटारिक बिस्तार सन
सभ झंझैटकेँ
अन्ठियाबैत
आगुए आगू पएर बढ़बैत अछि।

जिनगीक थकाबैटकेँ
मेटेबा लेल चाही
मनक कनकौआ आ
सपनाक अकास
जाहिमे मन भरि सकै
निधोख सतरंगा उड़ान।

मुदा किए दी दोसराक हाथमे

अपन डोइर?
छण छण लागल रहत शंकाक परेत
करवन हम कटि जाय
करवन हम लुटि जाय?

चुलबुलाहैट, चपलता
नेने देखए मन
कल्पनाक एना,
साँचक जमीनपर
टिकल पएरे ने
दइ छै जिनगीक अर्थ। ❑

घर

सिनेह आ आतमीयता
जखन देबालक चार
बनि जाइ छै।

वएह घर
घर कहाइ छै। ❑

सुनसान

जे छुटि जाइ छथि
एहि जिनगीक जेहलसँ
पाबि जाइ छथि
एकटा नब जिनगी।

बेजान तँ ओ रहै छथि
जे ओकर बादो जिबैत छथि।

ने रहै छै कोनो उत्साह
ने उमंग
रहि जाइ छै
बस सुनसान,
हरेक खुशीक छण
सेहो कऽ जाइ छै उदास। ❑

कुहेस

उदासिक पड़ल पपड़ी-पर-पपड़ी
कोनो कुहेस नहि
जे छैट जेतए
कोनो उज्जर भिनसरसँ।

ओ तँ एना घोंसियाएल अछि
हमर करेजमे
जे जएत
हमरे संग। ❑

साँचक धरातल

सपनाक संसारमे जीबैत छेलौं हम
नहि छल कोनो साँचक धरातल अपन।

जिनगीक दहकैत दुपहरियामे
नहि छल माथपर सिनेहक आँचर।

सरापल तबधल मन लेने
सौनक बात लेल तरसै छल मन
बातोमे छण छण भीजल छल नैन
फूलो गरैत छल काँटे समान,

दुनियाँक मेलामे
एसगर हकासल छल मन।

अहाँक फेन घुमि आयब एतए
सुनसान जिनगीमे हमर
स्वर्ण किरिण निकसैत
जेना छँटि गेल कुहेस

गमकए लगल जिनगीमे
चाननक सुवास।

हमरा संग आब अछि
हमर खुशीक आँगन
पाँखि हम पसारी किए
पबैले असमान।

साँचक धरातल अछि
आब हमर पहिचान। ❑

एहि प्रकारें

समय केर सागरक बालुसँ
मुट्ठीमे बटोरल
किछु बालुक कण
जे सटल अछि
हमर तरहत्थीक मध्य
ओही कणसँ
सागरक अनुभूति
संजोगि लइ छी।

एहि प्रकारें जीबि लइ छी
छिण-छिण केर जिनगी। ❑

नेनपनक घुमब

ठहक्काक अहाँ झरना जे
देलौं हमर आँगनमे,

किलकारीक कुँजनसँ
मुदित कएल घर-आँगन।

आभारी छी हे परमेसर
एहि नन्हकी देवदूतक लेल।

नान्हिटा ई बिरबा जे
लहलहैत अछि घर आँगनमे
हमर बेटो केर नेन्हपन
घुमि आएल आँगनमे। ❑

मेलामे एसगर

दृष्टिक अन्तिम छोरि धैर
जखन हमर आकुल आँखि
अहाँकेँ हियाबैत अछि

आ अहाँ जखन लगीचमे
केतौ नहि अभरै छी
तँ आरो भीषण भऽ जाइत अछि
मेलामे एसगर
भीड़ोमे भुतिएल
हेबाक भान! ❑

हमहुँ जीबि रहल छी

यै बसात यौ वसन्त
हमरो हेबाक कने
भान तँ कराऊ।

साँस लऽ रहल छी हम
मुदा जीबित रहबाक
बिसबास नहि।

जिनगीक बिरोधमे
ई जघन्य अपराध नहि?

छणेमे जीबि लेब
भरि जनम,
हरेक साँसमे
सरगमक स्वर
हरेक कम्पनमे
पायलकेर झनक
रेशमी आँचरकेँ

नहुसँ सरसराएब,
आँखिसँ आँखिमे
सभ किछु कहि देब,
बे पाँखिए
अकासकेँ नापि लेब,

पूर्णताक अभास तँ
सपने भऽ गेल।
खाली पल पल, खाली जिनगी,
जिनगी तँ बनबासे भऽ गेल।

सोन्हगर स्मृतिक फुलवारी
कने फेनसँ महकाऊ
यै बसात यौ वसन्त
हमरो हेबाक
कने भान त कराऊ। ❑

लहैर

साँझक सघन धुइनमे
सागर केर लहैर आ
धक्का खाइत हमर देह आ मन।
अहाँक संग रहैत, मन अभासैत छल
सागरमे सागर सन विस्तृत,
अनन्त सुख, भरल पुरल नेह।

समय केर निष्ठुर बाटपर अहाँ
आब छी जिनगीक सीमाकेर ओहिपार।
साँझक तरेगनमे, अहाँक छबि देखै छी।

वएह सागर तँ आइयो छै
ओहिने साँझक कुहेसो सघन
लहैरमे ने हलचल
सतहो अचंचले सन।

स्थिर समुद्र सन मनकेर गहनता
खान अछि अशान्तिक
वैचारिक सघनता। ❑

मनक बजार

टुटि कऽ जुड़ियो जाइ
तैयो दराइर देखाइत छै
मनक बजारमे
फेन नहि
ओ बौस
बिकाइ छै! ❑

जिनगीसँ की चाहै छी

हम जिनगीसँ की चाहै छी
हम अपनो किछु नहि जनै छी
किछु करबाक लेने लिलसा मनमे
अधखरुए लिलसे जीबै छी।
हम जिनगीसँ...।

होइए जखन मनमे लिलसा
बाटसँ हटि किछु काम करी
संस्कार नेह केर लोरीसँ
ओहि लिलसोकेँ सुतबैत जाइ छी।
हम जिनगीसँ...।

सोन सन रौदसँ भरल अकास
सोझहेमे अछि
मनक बन्न अन्हरिया कोठलीमे
तैयो हम सुटकल जाइ छी।
हम जिनगीसँ...।

चाहै छी विस्तार सिन्धु केर जिनगीमे
सरिपहुँ कुँइयाँक बेंग सन जीने जाइ छी।
हम जिनगीसँ...।

चाहै छी नदी सन बेग हम जिनगीमे
नोरोकेँ आँखिसँ नहि टघरए दइ छी।
हम जिनगीसँ...।
लिलसा अछि जीती जिनगीक खेल
टेकठीक मदैतसँ चलैत जाइ छी।
हम जिनगीसँ...।

किछु नीक करबाक लिलसा लेने
किछु नहि कऽ पेबाक कचोट लेने
एहि अजब द्वन्द्व केर हालैतमे
ओहिना जिनगी जीने जाइ छी।

हम जिनगीसँ की चाहै छी
हम अपनो किछु नहि जनै छी। ❑

केहेन भटकब

सगर धरणीक
सभ कोण
आइ ने काल्हि
फुलेबे करतै
तखन काँटबला बाटसँ
किएक भटकब?

सुनै छी
काँटोमे छै
फूल फुलेबाक चलैन। ❑

बेमन जिनगी

अचानक जखन लागए लगए
बेमन जिनगी,
ठमैक जाय
एकाएक उल्लास,
तँ बुझि ली
हम बनि रहल छी कथा।

बीतल कथा बनैसँ
नीक अछि
इन्द्रधनुषक अन्तिम कोरसँ
लाल रंग लऽ
जिनगीकेँ पुनि
आसक रंगमे रंगि
आयास आ बिसबासक
दीप बारि ली। ❑

हिमखंड

पघलै छै बरफक पहाड़
ठिठुरलो सिनेहकेँ,
मधुआएल
बिसबासक
रौद तँ
दऽ कऽ देखियौ! ❑

ई केहन सत्तैर

कखनहुँ तऽ नेहक दू बुन्न
दऽ जाएत छै सिन्धु सन तोष।

कखनहुँ समुद्रो
पियास नहि मेटा पबैत छै।

नै जानि पियासक ई केहन
सत्तैर आ नाता छै! ❑

बन्न ठोर

बन्नो ठोरक
सेहो अपन जिह्वा होइत छै
गोट-गोट खिस्सा
आँखिये कहि दैत छै।

ई बुझि सकैत अछि
एसगरे नेहसँ भरल हृदय
सगर संसार
एहि बातसँ अनभिज्ञ
रहैत छै। ❑

केना बिसैर सकै छी?

हम बिसैर सकै छी हुनका
जे हमरा संग
हमर सुखमे
साझी भऽ ठहक्का लगौने छथि।

मुदा हम किन्नहुँ बिसैर सकै छी हुनका
जे हमर दुखक संग
बिनु कहने नोर
बहेने छथि? ❑

घरक पाग

वृद्धजन छथि
घरक पाग
के नकारत
एहि सत्यकेँ
कोनो टा सभ्य समाज।

ओ छथि घर-आँगनक बरक गाछ,
सुकुमार लतासन भविषक खारही
हुनकेसँ लटपटाइत
पाबि सकैत अछि अधार
बढ़ौने रहि सकैत छथि लिलसा।

अनुभवक बोझ अतिभारी
तहूसँ दोहरी भेल छैन डाँर।

किछु कड़ू किछु खटगर मिठगर अनुभव
दोहराबैत चुप भऽ
सोनसन रौदमे लैत खुमारी।

अनुभवक ओ खान संजोगने
टकटकी लगा ताकि रहल छथि
अपन हिस्सा केर विरानी।

पुतोहु बेटा केर सभ किछु भेटैन
घर-बाहर संग किट्टी-पाटी
बच्चा पढ़ैले जाइ छैन
पाठशाला वा होस्टलमे
तैयो डर एकान्त बासमे
बिगाड़ि देतैन ई दादा-दादी।

घरक अन्हरिया कोणमे
समेटल खाट-पलंग सन
आकुल-व्याकुल मनक
किनका सुनेता बेथा।

संस्कार नहि घरक बात ई
केना निकालता बाहर
वृद्धाश्रमसं बाँचल छथि ओ
बँचबैत घरक लाज।

अपननहि घर अवहेलित
आइ अछि
घरक ऊँचका पाग।

जेठ नागरिक दिवसपर
बेटा-पुतोहुक संग
पाबि मान केर मंच
क्षण भरिक खुशी पाबि,
पुनि सन्हिया जाइ छथि
अपन हिस्साक कोणमे
बनि बितलाहा काल्हि।

बितलाहा काल्हि आ आजुक आइ
जँ मिलि सकए एकसंग
विकासक बाटपर
बढ़ि सकैत अछि अपन समाज। ❑

खेलौना सन

हे भगवान!
सभ घरमे
खेलौना सन
बच्चा दियौ
आ बच्चे सन खेलौना।

सुखक नीन
आ बिछौना सेहो दियौ
नेहक छाँह
तैसंग सुन्नर सपना दियौ।

किल-किलाइत रहए
खिल-खिलाइत रहए
आँखिमे ने कहियो
नोर भरए दियौ। ❑

घर आओर मकान

जाहि नगरमे
हमर घर
हमरा जतए तेज आ दाना भेटल
वएह हमरा लेल
स्वर्ग सन
असरा अछि।

जाहि शहरमे
हमर मकान
आ जीबाक समान
ओतहि जीबाक सुख
आ एसगरुआ जिनगीक ठेकान अछि। ❑

एहेन कोन जीयब

एहेन कोन जीयब
कि जीयब
एकटा लचारी लगए।

किएक ने करी एहेन
किछु काज
कि हमरा मुइला पछाइत
ई संसार
हमरा बिनु
अधखड्ड लगए। ❑

बहए दियौ जिनगीकेँ

दर्शनक फेरिमे
जुनि ओझराउ विचारकेँ
शब्दक मकड़जालमे
जुनि ओझराउ चालिकेँ।

बहए दियौ जिनगीकेँ
विमल अबाध धार सन
कहए दियौ मनकेँ भाव
सोझ सहज कविता सन। ❑

ई केहेन नाता

ई केहेन नाता अछि
खुशी अहाँकेँ भेटैत अछि
खोइछ हमर भरि जाइत अछि।

करोट जखन अहाँ घुमै छी
हमर सुख हेरा जाइत अछि।

चोट अहाँकेँ लगए
नोर हमर आँखिमे
डबडबा जाइत अछि।

अहाँक आँखिमे
नोर छल-छलाइसँ पहिनहि
अपन पिपनीमे समेटबाक
मन होइत अछि।

अट्टखेल करैत
लहैरमे किएक
अहाँक छवि

अभरऽ लगैत अछि।

चुपे-चाप मौसम
गुनगुनाए लगैत अछि
अहाँक स्मृति
हमरामे बसि जाइत अछि।

कानमे मिठगर
घन्टी सन बाजए लगैत अछि
जखन अहाँक बोलक
जादू पसरैत अछि।

जिनगीक आधा खाली जाम
आधा भरल नजैर अबैत अछि।

अनाम सम्बन्धकेँ
नाम देबए-मे
शब्दो भण्डार खाली भऽ जाइत अछि।

अहीं कहू ने
अहाँसँ ई
केहेन नाता अछि? ❑

मनक परवेरू

आकुल नैन
व्याकुल बाट
अलोपित होइत
आड़ि-धूर,

क्षितिजकेँ
छुबाक आस
अतृप्त पियास।

तबधल रेगिस्तानमे
सौनक बात
नेहक मेघकेँ बरसब
जिनगीक भीजब,

छद्म सपना
फुजल आँखिक छल।

मनक पखेरू केर
पाँखि कतरब
यएह अछि
यथार्थ केर धरातल। ❑

कचोट

अधखड्ड जिनगीक चोट
एना जिनगीमे
सन्हिया रहल अछि,

जेना करिया रातिक
गाढ़ रोशनाइ
नोरोसँ नहि
धुआ रहल हो। ❑

स्मृति

अहाँक गुम्मी
अहाँक आँखिक जिह्वासँ
अनकहलो बात
कथा बनि जाइत अछि।

नहुसँ छुबि कऽ
बात
फुला जाइत अछि
अधफुलल कलिकाकेँ
ओ छुअब
जिनगीक मस्ती
बनि जाइ छै।

अहाँक गमक लऽ कऽ
अबैत अछि वात
ओ क्षण बनि जाइ छै
जिनगीक स्मृति। ❑

आसक चिड़ै

मन तँ आसक चिड़ै छै
एकरा किए बान्है छी
कैदी बनैले
मनुषक देह
की कम अछि? ❑

साँसक संग

खनकै कंगना
छनकै पायल
ओझरल केश
छितरल काजर।

टुटल-फुटल
साँसक हलचल
धरतीक पियास
मेघक तरपब।

रौद सोहनगर
कुनमुनाइत सन
ओकर छुअब।

एक आँचमे
पघलए तन-मन।

सपना बनि गेल

सपनौती जीवन।

साँस-साँस संग बहब
बिनु कहने सभ कहब। ❑

चर्चा

ओ संसार हमर नहि भऽ सकैत अछि
जेतए अहाँक गमक नहि हो
अहाँक स्मृति नहि हो,
चर्चा नहि हो जेतए अहाँकेँ
ओ सभा हमरा अनसोहाँत लगैए। ❑

दिगंतक नजीक

दिगंतक नजीक
करै छी
हमर उमेद

जेतए दू संसार
मिलियो कऽ
नहि मिलै छइ।

अपूर्ण अछि आस
अपूर्ण अछि मिलन केर आग्रह
आब तँ फूल फुलाइयो कऽ
नहि फुलैत छै
फुलाएलो-फुलाएल नहि लगैए। ❑

केहेन उपराग

लाल जागल आँखि
पैछला रातिक
करोट
रात्रिक जागरण
कहियो खतम नहि होमए बला
सत्तैर।

वियोगनिक
यएह
अमाबसक
भाग्य छै
किनकासँ शिकाइत
केहेन उपराग..! ❑

सुख-दुख

समय केर अन्हारसँ
जुनि डेराउ हे मन।

मेघक अन्तिम छोरपर
चमकैत बिजुरिक
अहाँ अन्दाजि कऽ करू
अपन नाप-जोख।

जखन निकसै छै
गुनगुनाइत रौद
ठरल बसातक पछाइत
ओकर मृदुल-मृदुल स्पर्शसँ
फुलवारीक कोण-कोण
अबाद भऽ जाइ छइ।

सुख आ दुखकेँ
संगे-संग सहैमे
जीवनक सहजता छै।

काँटक नमहर बाट
पारे कऽ कें ने
गुलाब शानसँ
महकै छइ। ❑

आन

जाहि आँखिमे
हिलैत रहै छल सपना
आब ओहू आँखिमे
बस बिराने-बीरान नजैर अबैए।

देखै छी जखन
पूर्वकालिक छबि
हमरा अपनहिमे
आन देखैत अछि। ❑

कारण

ओ पुछै छथि
चुप रहै छी किए
ठोर गुम्मे रहल
नोर छलैक जाइए।

की दिऐ हम जवाब
सबाल दुनियाँक सुनि
जखन जिनगीए हमर
सबाल बनि कऽ
रहि गेल-ए। ❑

सतरंगा आनन्द

सभ ऋतुमे
फुटपाथपर ठाढ़
ओ काँच उमेरक नेना
बेचैत अछि सतरंगा बेलुन
आ छिड़ियाबैत अछि
आनन्द केर रंग।

नन्हकिरबा सभ कुदैत अछि
नान्हिटा हाथमे पकड़ने बेलुन।

बेलुन ओकरो ललचाबै छै
मुदा ओ कहियो
अपनो लेल कीनि पौत?

गरीबी अभिशाप छै
सतरंगा सपनाकेँ
चुरमचूर करए-बला।

ओकरा बचेबाक छै
एक-एक गोट कैंचा
आनए लेल
बेराम माइयक दबाइ।

छोट भाइयक लेल
एक कपटी दूध
सभ दिन पुड़ेबाक छै
अपनाकेँ तँ बस
काममे खटेबाक छै।

एहि सोचमे डुमल
ओकरासँ किछु कीनि कऽ बेलुन
पकड़ा दइ छिऐ
ओकर नान्हिटा हाथमे
ई छोट-छीन उपहार।

ओकर बिमल मुँहपर
चमकलै आनन्द
हमरो दैत अछि ओ
सतरंगा आनन्दक अभास। ❑

अहाँक थाती

हम जोगा कऽ राखब
अपन देशक खातिर
पैरुखक थाती
अहाँ जे हमरा नाम कऽ गेलौं।

मुस्किया कऽ सहब
सभ समय केर धाह
देशभक्तिक मनसूबा
ने कहियो हएत कम।

बलिदानक फूल
देलौं जे अहाँ आँचरमे
ओकर गमकसँ
गमकतै हमर बतन।

हमहीं जीजाबाई
हमहीं अमर सिंह राठौड़क छी माए
लोरी केर बदला

कहबै बेटाकेँ हम
बलिदानक कथा।

जँ फेर कोनो आफत
एतै देशक मानिपर
आ मंगतै जँ बलिदान
देशक मानि लेल
कऽ देबै हँसैत-हँसैत
अपन दुलरुआ
बलिदान।

जे जान दइ छथि
देशक लेल
ओ छोड़ि जाइ छथि
बलिदानक चिन्हासी
जइपर चलि कऽ
अक्षुण्ण रखै छथि नवतुरिया
मुक्त राष्ट्र, मुक्त संसार। ❑

बिसबासक मूर्ति

सभ शहरक
सभ गलीमे
किछ प्रार्थना-घर आ
मण्डिल होइत छै
जेतए लोक
अपन-अपन
बिसबासक मूर्ति
बना दैत छथि,
अपन-अपन
बेवहार आ चलैनसँ
ओकरा सजा लइ छथि।

शेष संसारक
धरम-करमसँ
फेर ओ अजान भऽ जाइ छथि।

नहुँ-नहुँ ओ
एना हेरा लइ छथि

सतही प्रार्थनामे,
अपन धरमकेँ ओ
अपन इमानसँ
पटेबाक बदला
रंगि दइ छथि
हुनक लेहुसँ
जे हुनक धरमसँ
इतर छैन।

बिसबासक मूर्ति
बनबैत-बनबैत
हुनका पतो ने चलै छैन
कि ओ अपनहि
करवन मूर्ति बनि जाइ छथि। ❑